किस्से कुछ अनकहे

काजल कल्याण

प्रस्तावना

यह किताब कई किस्सों, अनुभवों और भावनाओं का संगम है। हर अध्याय एक नई सोच, एक नया एहसास और एक अलग पहलू को सामने लाता है — कभी समाज की सच्चाई, तो कभी रिश्तों की जटिलता। यहाँ हर शब्द में जीवन की झलक है, और हर कहानी अपने भीतर एक संदेश लिए हुए है।

यह सिर्फ एक किताब नहीं, बल्कि एक सफ़र की शुरुआत है। इसके साथ और भी किताबें जुड़ती चली जाएँगी — हर किताब अपने अलग रंग और गहराई के साथ, लेकिन मकसद एक ही रहेगा: सोच को जगाना, महसूस कराना, और बदलाव की ओर बढ़ना।

यह किताब समाज, रिश्तों और इंसान के भीतर चल रही भावनाओं की एक गहरी झलक दिखाती है। इसमें उस सच्चाई को महसूस किया जा सकता है, जिसे हम रोज़ देखते तो हैं, पर अक्सर कह नहीं पाते। काजल कल्याण ने इसमें अपने अनुभवों, सवालों और संवेदनाओं को इस तरह पिरोया है कि हर पाठक को इसमें कहीं न कहीं अपना अक्स नज़र आएगा।

लेखन यहाँ सिर्फ शब्दों का माध्यम नहीं, बल्कि आत्म-अभिव्यक्ति और सोच में बदलाव लाने का एक जरिया बन जाता है। इसमें बचपन की यादें हैं, सपनों की बातें हैं, क्रिकेट का जोश है, और ज़िंदगी की सच्चाइयाँ भी। कभी यह समाज पर सवाल उठाती है, तो कभी हमें खुद के भीतर झाँकने पर मजबूर करती है।

कुल मिलाकर, यह रचना जीवन के हर पहलू को छूती है — संघर्ष, उम्मीद, प्यार, और आत्म-विश्वास को। यह हमें याद दिलाती है कि दुनिया चाहे जैसी भी हो, हमारी सोच और कलम ही सबसे बड़ी ताकत हैं।

1. समाज

आज, चलो समाज की बात करते हैं, उनकी मान्यताओं पर थोड़ा विचार करते हैं! समाज की बात करें, तो कुछ अजीब है यहाँ, मेरी समझ से तो सब विपरीत है यहाँ! बाहर से सब चाहे आप कामयाब बने, अंदर से वही लोग आपको दबाते है यहाँ! इसे दोगलापन कहूँ या स्वार्थ, कुछ समझ नहीं आता; हद इतनी हो गई कि अब कुछ कहे बिना रहा भी नहीं जाता!

लड़कियों को बड़ी शिकायत है इस समाज से; उन्हें महज़ एक चीज के समान समझा इस समाज ने! कभी घूँघट तो कभी चार दीवारी के पीछे धकेला इस समाज ने, तो कभी बेवजह उन पर हाथ उठाया इस समाज ने! सुरक्षा का हवाला देकर ही सही, महिलाओं को कमजोर बनाया इस समाज ने!

अच्छा, चलो लड़कों पर गौर फरमाते हैं। लड़की को ताड़ने वाले यहाँ मर्द कहलाते हैं! "रोना नहीं है" कहकर उन्हें मर्द बनाया गया, जिससे उनके अंदर का इंसान दर्द निकालना ही भूल गया! पैसे कमाने की मशीन तो उन्हें बनाया गया, पर रिश्ते निभाना उन्हें नहीं सिखाया गया! उनके गुस्से को मिला सहारा और आँसुओं को धिक्कार। वाह-रे-वाह संसार, वाह-रे-वाह संसार!

एक नज़र उन पर जिनको हमने नजरअंदाज किया, तिरस्कार करके जिनका हमेशा अपमान किया! दोष उनका सिर्फ़ इतना कि उन्हें एक गुणसूत्र ज़्यादा मिला। समाज इतना जला कि उन्हें समाज से बाहर ही निकाल दिया! किन्नर देती हमारे बच्चे को दुआ और हमने उसे तिरस्कार दिया! इस समाज ने सब कुछ बिगाड़ दिया!

कोशिश थी कि ढूँढूँ इंसान इस समाज में, कोई इंसान की जगह इतिहास की किताब थमा गया! उसने कहा, "ढूँढना है तो ढूँढो इस किताब में, क्योंकि इस समाज ने तो इंसान को कब का दफना दिया!" समस्या ये नहीं कि बुरे लोग हैं यहाँ, बस समाज की रूढ़िवादी सोच ने सबको बुरा बना दिया!

और क्या कहूँ, कुछ समझ नहीं आता, घुट-घुटकर अब रहा नहीं जाता! चार दिन की ज़िंदगी है, जीने दो यारों, इससे ज़्यादा तुमको समझाया नहीं जाता!

2. साथी

ये किस्सा थोड़ा गहरा है, मन में बसी भावनाओं का एक पहरा है! चाहती हूँ कोई आए मेरे जीवन में, भगाए उस डर को, जो बसा है मेरे मन में! डर है कि कहीं फंस न जाऊं, समाज की छोटी सोच के नीचे दब न जाऊं! चाहती हूँ समाज से लड़ना, बस कोई साथ दे इस सफर में!

ख्वाहिश ये है कि खेलें हम साथ, जीवन में और साथ ही मैदान में! चाहती हूँ खुश होना किसी की खुशी में, पर वह भी शामिल हो मेरी खुशी में! ख्वाहिश है किसी के दुख बांटना, बस वह भी साथ हो मेरे दुख में! चाहत इतनी-सी है उससे कि मैं अकेली न चलूं इस सफर में!

चाहत ये भी है कि उससे बातें करनी हैं मुझे, उससे भी ज़्यादा उसे सुनना है मुझे! उसके हालात सुनने और समझने हैं मुझे, साथ ही बहुत कुछ समझाना है उसे! चाहती हूँ चले साथ हम हाथों में हाथ लिए, या यूं कहूं, एक-दूसरे को साथ लिए! इच्छा ये कि बनाए एक घर ख़ुद के लिए, बिना किसी घमंड और गुस्से को लिए! चाहती हूँ बराबरी उस रिश्ते में, जो निभाएं हम, सिर्फ़ एक-दूसरे के लिए!

पता नहीं कब उससे मुलाकात होगी, मन की उलझनें मन से बाहर होंगी! न जाने कब वह मेरे जीवन में आएगा, अंधेरे से भरे जीवन में रोशनी का दीपक जलाएगा! आस इतनी है उससे कि वह मेरा साथ निभाएगा!

वादा है उससे, जीवन के संघर्ष में वह मुझे साथ पाएगा। तो उम्मीद है, मेरे संघर्ष में मेरे साथ खड़ा हो जाएगा! चाहत और सवाल दोनों हैं खुदा से, क्या मुझे ऐसा जीवनसाथी मिल पाएगा? या ये ख्वाबों का संगम बनके रह जाएगा?

3. एक लड़की की आवाज

एक लड़की जो कल ही बड़ी हुई थी, कहने को समझदारों के बीच खड़ी हुई थी! पर, बड़े होते ही न जाने क्यों उसकी उम्मीद टूट गई, सपनों को पूरा करने की चाहत भी छूट गई! बहुत भरोसा था उसे अपनों पर, पर अब विश्वास की डोर भी टूट गई! दोष किसको दे, उसे नहीं पता, क्योंकि वह तो रिश्तों से भी मुँह मोड़ गई!

बचपन में झेला उसने कुपोषण और बड़े होने पर अपमान, अपनी ही बेटियों को बना दिया लोगों ने गुलाम! गुलामी ऐसी कि हर जगह लड़की को पड़ा झुकना, क्योंकि उसके कंधों पर डाला गया, बाप की इज़्ज़त का जिम्मा! इज़्ज़त वह जो बिना किसी कसूर चली जाती है, शायद इसलिए छेड़छाड़ होने पर भी, सजा लड़की को दी जाती है!

20 साल की होते ही करनी है उसकी शादी, फिर चाहे लड़की हो ही ना हो राजी! अगर विरोध करे लड़की तो बोला जाता है बत्तमीज, पर जब यही विरोध करे लड़के, तो वह क्यों नहीं है बत्तमीज! क्यों है अपनी ही बेटी इनके लिए बोझ, जिसको घर से निकालने की इनको इतनी सोच!

आखिर लड़की का विश्वास टूट गया, क्योंकि उसके करियर को कभी महत्व दिया ही नहीं गया! रोटी बनाना गलत नहीं है, पर उससे सिर्फ़ रोटी बनाने की उम्मीद रखी गई, इसलिए उसकी भरोसे की नींव भी टूट गई! उसे नहीं पता अपनी समस्याओ का समाधान, इसलिए आजकल है बहुत ज़्यादा परेशान!

हैरान हूँ मैं, क्योंकि उसकी परेशानी की किसी को पड़ी ही नहीं। क्या हुआ, ये पूछने की किसी ने ज़रूरत समझी ही नहीं! पर अब लगता है कि बहुत हो गया, सहन करने की ताकत का भी सब्र ख़त्म हो गया! अबला नारी बनना अब उसे मंजूर नहीं, मरना है तो जीकर मरे, घुट-घुटकर मरना उसे मंजूर नहीं!

फड़फड़ा रहे कुछ कबूतर मेरी छत पर भी, क्योंकि अब मैना को पिंजरे में रहना मंजूर नहीं!

4. विकास

यूं ही निकल जाते हैं अक्सर गलियों में, क्योंकि अब घर में मन नहीं लगता! अपनों के होते हुए भी कोई संग नहीं लगता! कहने को तो एक घर है मेरा, पर अब घर भी अपना-सा नहीं लगता! शिकायत सिर्फ औरों से नहीं है मुझे, कसूर मेरा भी है शायद यही! अपनों को दूर जाते देख मैंने भी तो रोका नहीं!

एक डिवाइस के आने से अचानक सब बदल गया, जन्मदिन विश करने का तरीका तक बदल गया! वैसे तो अच्छा ही है सब, पर न जाने लोगों का नजरियाँ कैसे बदल गया ! कोई स्टेटस न लगाए, तो सब कहेंगे पक्का इनके बीच कुछ बिगड़ गया! क्या स्टेटस लगाना इतना जरूरी है, कि न लगाए तो रिश्तों पर सवाल उठ गया!

बात इतनी-सी नहीं है, सच तो ये है कि सब कुछ बदल गया ! अब गलियों में खेलने की बजाय बच्चों का फोन मे मन लग गया ! सुनी गलियाँ अकसर उन्हें बुलाती हैं, शायद वो भी आँसू बहाती हैं! अपनों की दूरी भला किससे सही जाती है, इसलिए अकसर मेरे साथ-साथ बैठ जाती हैं!

वैसे एक साथी अभी भी है, जिससे मन में संतोष भी है! साथी वह जो मेरे बोलने से पहले ही सब समझ जाए, साथी वह जिससे कुछ भी कहे बिना रहा न जाए! और साथी वह जो कागज-कलम के नाम से जाना जाए! इसलिए बैठ जाती हूँ अकसर उसके साथ, जब भी करनी होती किसी से दिल की बात !

पर सवाल उठता है अकसर मन में, क्या यही है विकास जहाँ परिवार का ही नहीं है साथ! क्या चलते-चलते हम इतनी दूर चले आए, कि परिवार और खेल-कूद को भी पीछे छोड़ आए! छोड़ना था परेशानियों को, पर हम तो खुशियों को भी छोड़ आए! ऐसे विकास का क्या फायदा, जहाँ जरूरतमंद लोगों की मदद महज दिखावा बन जाए!

मानती हूँ, आज चीजें पहले से आसान हैं, अब तो घर बैठे ही मिल जाता सारा समान है ! मैं नहीं कहती ये गलत है, पर जाने क्यों इसका असर कुछ अजीब है! एक तरफ यह हमारी मदद करता है, तो दूसरी तरफ आलसी भी बनाता है! शायद इसलिए मेरे मन मे उठे कुछ सवाल है !

5. सफर

कहानियों से तो जैसे बहुत पुराना नाता है। माँ कहानियाँ सुनाकर सुलाती थीं, तो दोस्त कहानियाँ सुनाकर डराते थे! असल में वो भूतों की कहानियाँ सुनाते थे। उस रोज मैं पानी पीने के लिए बाहर निकली, और मैंने छन-छन की आवाज सुनी!

समझ गए ना, वो झूठी कहानियाँ सुनाते थे! अंदर से सबको पता था, फिर भी इतनी सफाई से झूठ बोल जाते थे! बस, वही समय था जब मेरे कहानी सुनाने का दौर शुरू हुआ। झूठी कहानियों से ही सही, मेरे जीवन में नए सफर का आगमन हुआ!

वो दौर भी आया जब मैंने लिखना शुरू किया, छोटी-छोटी कहानियों ने जैसे सुकून सा दिया! याद है मुझे पहली कहानी का फसाना, यूं ही बैठी थी और पढ़ रही थी एक किताब जिसमें लिखा था सम्राट अशोक का अफसाना!

अशोक का अपने भाइयों को मारना मुझे रास नहीं आया, इसलिए तुरंत मन में सवाल उमड़ आया! बहन ने कहा, "राजगद्दी का था खेल, इसलिए अशोक ने अपने भाइयों को मार डाला!" बस फिर क्या था, इस सवाल ने मेरी पहली कहानी का प्लॉट बना डाला!

वो छोटी-सी कहानी इस सफर की शुरुआत बन गई! और धीरे-धीरे ये कहानियाँ ही मेरी पहचान बन गई! मुझे याद है जब मेरी दोस्त मुझे "writer" कहकर बुलाती थी, दिल को तो जैसे राहत ही मिल जाती थी!

पहचान ऐसी बनी कि स्टेज पर स्पीच बोलने का मौका मिला। कल जिस टीचर के हाथ से थप्पड़ खाया था, आज उसी के हाथ से दुलार मिला! बात इतने से खत्म नहीं हुई, सच तो यह है कि मेरी वजह से शोर करती क्लास को डांट खाने से छुटकारा मिला!

उनके चेहरे की खुशी बता रही थी क्या लिखा था मैने, और मेरे चेहरे की खुशी बता रही क्यों लिखा था मैने ! असल में, पहली बार किसी के दिल को छुआ था मैंने, जैसे उन्हें एक अलग नजरिए से जाना था मैंने !

समय बीता और निखार आया, मेरी कहानियों का नया रूप उभर आया! पूछना था मुझे आप सब से बहुत कुछ, इसलिए यहाँ तक चला आया!

6. अजनबी से मुलाकात

एक बार की बात है, मैं यूँ ही रास्ते से जा रही थी। बेलपुरी खाने का मन था, पर नहीं खा रही थी! उसी रास्ते एक अजनबी से मुलाकात हुई, उसके आते ही न जाने कैसे बरसात हुई! शायद मौसम को भी हमारा स्वागत करना था, इसलिए बिन मौसम बरसात हुई! यहाँ तक तो ठीक था, आगे सुनो फिर क्या बात हुई!

बूंदों से बचने के लिए हम एक छत के नीचे खड़े हो गए, और इसी बहाने हमारे बीच के फासले भी थोड़े कम हो गए! फासले कितने कम हुए, ये मत पूछो, क्योंकि हम तो उसकी आँखों में ही खो गए! न पूछा हमने उससे कुछ, न पूछा उसने हमसे कुछ, फिर भी ऐसा लगा जैसे दिल के हाल बयां हो गए!

हिम्मत दिखाकर मैंने बढ़ाई बात, और एक हाय बोलकर शुरू हुई हमारी वार्तालाप! बातें कि उसने कुछ चार और बातें कि मैंने कुछ चार, कि इतने में बंद हुई बरसात! बरसात का यूं बंद होना शायद था हमारी मुलाकात का अंत, पर सब्र करो क्योंकि ये नहीं है इस कहानी का अंत! आखिर शुरू करना ही है कोई फसाना, तो क्यों चाहिए बारिश का बहाना!

हम बैठ गए वहीं एक टेबल के पास, शायद बताना था एक-दूसरे को कुछ खास! बातें क्या थीं ये मत पूछो, बस इतना याद है उस दिन हम दोनों थे एक-दूसरे के साथ! समय बिता और आखिर बात खत्म हुई, जाना था उसे कहीं और इसलिए मुलाकात की घड़ियाँ भी समाप्त हुई!

यूं तो अक्सर जाते थे उस रास्ते, पर कभी ठहरने का मन न करता था। कुछ तो खास था उस दिन, जो वापस आने का मन ही नहीं किया था! जाने से उसके हुआ मन परेशान, जाना ही था तो मेरे पास क्यों आया? जो पूरा न हो सके, वो ख्वाब ही क्यों दिखाया!

ना होश, ना ठिकाना, क्या यही है प्यार का फसाना! अगर कहते हैं इस अहसास को प्यार, तो मुझे भी दूसरी मुलाकात का इंतजार है!

7. दोस्ती

एक दिन उसने कहा कि मैं उसकी best friend हूँ! फिर भी कमख्त इतनी जल्दी मुझे भूल गई! अच्छा, ठीक है, मैं शिकायतें थोड़ी ज्यादा करती हूँ, पर उसके साथ ही तुम्हें याद भी तो करती हूँ! सोचती हूँ, शिकायतों के बहाने ही सही, हमारी मुलाकात तो होगी! भूले-भिसरे दोस्त को मेरी याद तो आएगी! तू गुस्से में मुझे मारने के इरादे ही सही, मेरे पास तो आएगी! अच्छा, ठीक है, तू कहती है तो आगे बढ़ जाते हैं, पर एक बात तो बता, क्या तुझे सच में मेरी याद नहीं आएगी? तू मुझे पागल बोल या शायर, पर ये सच है कि कभी-कभी तेरी बहुत याद आएगी। अब तेरे दिल का तो पता नहीं, पर मेरे दिल से ये यादें कभी नहीं जाएंगी!

उस दिन जब तू बिना बताए गई, तो मुझे बहुत गुस्सा आया, पर सच कहूँ तो उससे भी ज्यादा रोना आया! क्या फर्क पड़ता है जो मैंने आँसू नहीं बहाए, सच्चा दोस्त तो वो होता है जो आपके अंदर छिपे दर्द को पहचान जाए! मैं तुझे दोष नहीं दूँगी क्योंकि तू धोखेबाज नहीं है, पर कुछ तो हुआ होगा जो तुझे मेरा birthday तक याद नहीं रहा!

अच्छा, चल बात आगे बढ़ जाते हैं, अपने जीवन में शिकायतों को पीछे छोड़कर आगे बढ़ जाते हैं! वैसे, ये तो बता, तेरी नई दोस्त कैसी थी? क्या वो मुझसे खास थी या मेरे जैसी थी? अच्छा, ठीक है, उसका नाम मत बता, क्योंकि मुझे डर है कि कहीं मैं उससे जलने न लगूँ! ये सब छोड़ और ये बता, क्या वो मेरे जैसी थी?

8. मिशाल

अकसर कुछ लोग आपका मजाक उड़ाते हैं, आपके सपनों पर सवाल उठाते हैं! कभी-कभी दिल टूट जाता है, खुद के सपनों पर खुद ही शक हो जाता है! लगता है जैसे हममें कुछ नहीं, अब और लड़ने की हिम्मत नहीं! पर क्या ये सही है?

सोचो, अगर झाँसी की रानी ने भी यही सोचा होता, सोचो अगर डॉ. अब्दुल कलाम ने चाँद तक पहुँचने का सपना छोड़ दिया होता, या हमारे महान क्रांतिकारियों ने आज़ादी के बारे में सोचा ही न होता, तो क्या हमारा देश आज़ाद होता? क्या हम ISRO जैसी संस्था खोल पाते और क्या भारत की बेटियाँ रानी लक्ष्मीबाई की तरह बहादुर बन पातीं? नहीं, शायद इनमें से कुछ भी नहीं होता!

क्योंकि मिसाल भी तभी बनती है जब इंसान लड़ता है, कभी गरीबी से, कभी समाज से तो कभी अपने ही परिवार से! लड़ना सबको पड़ता है, कोई लड़कर जीत जाता है तो कोई हारकर भी जीतने की चाह रखता है! और ये चाहत ही उन्हें मंजिल के करीब ले जाती है!

लोगों की बातें परेशान करती हैं, तो ऐसी मिसालें हिम्मत बनती हैं! तुम्हें भी ऐसी मिसाल बनना है, तुम्हें देखकर लोग कहें कि तुम्हारे जैसा बनना है! तुम्हारी कामयाबी न सिर्फ प्रेरित करे, बल्कि दूसरों के लिए रास्ते खोलती चले! जियो खुद के लिए, और दूसरों के लिए, ताकि तुम्हारी हर जीत मिसाल बने!

हारना और जीतना तो जीवन का हिस्सा है। अगर हार हो, तो ऐसी हो कि वो भी मिसाल बने!

9. क्रिकेट

वैसे तो क्रिकेट से बहुत पुराना नाता है, बचपन का एक खूबसूरत अफसाना है! याद है मुझे लकड़ी के फट्टे का बैट बनाना और बॉल खो जाने पर मैच खत्म हो जाना! याद आता है दूसरों की बॉल छुपाना और अपनी को झगड़कर वापस लाना!

पर न जाने क्यों बड़े हो गए, बड़े होते ही वो दिन भी खो गए! अब तो बैट और बॉल भी एक कोने में जाकर खड़े हो गए! मानती हूँ जरूरतों को पूरा करने में हम खो गए, पर साथ ही जीना भी तो भूल गए!

अच्छा, चलो थोड़ा गौर से सोचें, अपनी इच्छाओं का गला न घोटें! माना थोड़ा मुश्किल है समय निकालना, पर एक बार समय निकालने की तो सोचें! खुद से पूछो, क्या ये नामुमकिन है, या मोबाइल में स्क्रॉल करने जितना मुमकिन है!

अगर जीना ही है तो खुलकर जीते हैं, बचपन को फिर से जिंदा करते हैं! चलो, एक बार फिर बैट उठाते हैं, और मैदान पर लौट चलते हैं।

10. सही और गलत

यूं तो मेरी गिनती शरीफों में होती है, कहने को शराफत इज्जत की बात होती है! पर उस दिन तो किस्मत ही खराब थी, बदनामी की जिम्मेदारी चाचा के हाथ थी! कुछ घंटों पहले ही मिले थे एक मोड़ पर, अब हम पर समय की मार थी!

बात ये थी कि चाचा चोर थे, हमारे सामने कुछ और और दुनिया के सामने कुछ और थे! शायद कोई मजबूरी रही होगी उनकी, वरना चाचा इतने बुरे भी नहीं थे! चुराए उन्होंने पैसे, न जाने किसके लिए, जब नौकरी थी अच्छी-खासी तो बेईमानी किस लिए!

सवालों के बीच मैं सहमा बैठा रहा, ऑटो के साथ डर भी बढ़ता चला गया! कहीं कोई देख न ले, कोई पहचान न ले और देखते-ही-देखते रास्ता भी पार हो गया! घर पहुँचते ही मैं भागकर पापा के पास गया, उन्हें बताया कि आज शहर में क्या-क्या हुआ!

सोचा शायद सबक मिले चाचा को, पापा समझाएँ कि चोरी करना गलत बात है, पर अफसोस पापा ने उसे नजरअंदाज किया! घर में कुछ गलत होते देख, न जाने क्यों मैं सो नहीं पाया! जिनसे सीखा कुछ गलत न करना, उन्हें गलत करते मैं देख नहीं पाया!

अगली सुबह मैं उठ खड़ा हुआ, जीवन में एक नए दिन का आगमन हुआ! पर मेरा चेहरा फिर भी मुरझाया हुआ ! शायद मुझे चाचा के चोर बनने का दुख था या अंदर से कुछ और और बाहर से कुछ और बनने का! क्या करूँ मैं इस मोड़ पर, जब फायदा ही नहीं है कुछ बोलने का !

मैं ऑटो में बैठा और शहर की तरफ चल पड़ा। नजर पड़ी पुलिस पर और मेरा जमीर जाग गया! सोचा बात करूँ पुलिस से, पर अचानक रुक गया। आखिर मेरे जमीर के सामने रिश्ता आकर खड़ा हो गया! बात इतनी-सी हुई कि मैं कमजोर पड़ गया!

लेकिन ना मुड़ने का भी कोई कारण था, शायद मेरा इरादा रिश्ते पर भारी था! इसलिए मैंने कदम बढ़ाए और चल पड़ा, पुलिस के सामने एक सांस में सब बोल दिया! पुलिस ने सुना और एक्शन लिया कि इतने मे चाचा ने फोन किया! और मैंने फोन पुलिस के हाथ में थमा दिया!

उस दिन मैं दुखी था क्योंकि मेरा चाचा चोर है, और खुश था क्योंकि मेरा किरदार कुछ और है!

11. एक क्रिकेट प्रेमी

ये किस्सा कल ही का है, जब टीवी खराब होने के कारण मैच miss होने लगा! सोचा, आज छोड़ो, फिर कभी मैच देखेंगे। इस मैच में ना सही, अगले मैच में टीम का साथ दे देंगे! हालांकि छोड़ने का मतलब ये नहीं कि बिल्कुल छोड़ देंगे, बीच-बीच मे google पर स्कोर भी देखते रहेंगे!

अपनी बनाई रणनीति पर मैं चलने लगी। देखा तो सामने ऑस्ट्रेलिया की तूफ़ानी पारी चल पड़ी! छक्के-चौकों की बरसात देखकर मैं डर गई, कहीं-न-कहीं इंडियन टीम से जीतने की उम्मीद भी छूट गई! ऐसा नहीं कि मुझे अपनी टीम पर भरोसा नहीं, बात ये थी कि सामने दुनिया की नंबर वन टीम खड़ी ! 413 रन टीम कैसे बनाएगी, मैं सोच ही रही थी, कि इतने में मैदान पर स्मृति आ गई!

वो खिलाड़ी जो खेल का रुख बदल दे, वो खिलाड़ी जो बड़े-बड़े रिकॉर्ड आसानी से तोड़ दे! स्मृति वो खिलाड़ी है जो इतिहास पर इतिहास रच दे! एक इतिहास कल भी रचा, जब स्मृति ने 50 गेंदों पर शतक लगा दिया! और देखते ही देखते 18 नंबर की जर्सी ने, 18 नंबर की जर्सी का रिकॉर्ड तोड़ दिया!

वैसे, यही वो खिलाड़ी है, जिसने मुझे Jio Hotstar इंस्टॉल करने पर मजबूर कर दिया! स्मृति का क्या खूब साथ हरमन ने दिया, 34 गेंदों पर 50 बनाकर इतिहास रच दिया! मैदान पर दोनों खिलाड़ी खेलती रहीं और ऑस्ट्रेलिया पर दबाव डाल दिया! ऐसा लगा जैसे बस कुछ ही पलों बाद भारत ने मैच जीत लिया! पर अचानक हरमन और स्मृति की विकेट गिरते ही सब बदल गया!

स्मृति और हरमन के बाद दीप्ति ने मोर्चा संभाल लिया, 54 गेंदों पर 73 रन का अच्छा योगदान दिया! सच कहूँ तो दीप्ति ने सबके दिलों में आस का दीपक जला दिया! पर एक बार फिर दीप्ति के आउट होते ही, सबका चेहरा मुरझा गया! टीम मैच हार गई पर करोड़ों भारतवासियों का दिल जीत लिया!

जब भी देखूंगी पीछे, मुझे ये दिन याद आएगा, क्योंकि इस दिन को हमारे खिलाड़ियों ने इतिहास बना दिया!

12. A.I और मैं

कैसे बताऊं वो, क्या कर जाएगी, सच कहूं तो एक पल में एक किताब लिख जाएगी! न जाने क्यों लगता है कि मेरी सालों की मेहनत व्यर्थ चली जाएगी! A.I. से कोई शिकायत तो नहीं मुझे, लेकिन उसके आने से बेचैनी जरूर आएगी!

क्या होगा जब A.I. पेंटिंग भी खुद कर पाएगी, एक कलाकार की अहमियत क्या रह जाएगी! उसकी सालों की मेहनत मिट्टी में मिल जाएगी! सोचो, अगर मशीन सिंगिंग, डांसिंग और एक्टिंग भी कर पाएगी, तो इंसानों की क्या ही अहमियत रह जाएगी! यकीन मानो, ये जल्द ही शेफ भी बन जाएगी और देखते-ही-देखते हर फील्ड में जगह बनाएगी! और आखिर में इतनी परेशानियों का जवाब भी A.I. ही दे पाएगी!

इस भीड़ में कलाकारों की आवाज दब न जाए, इसलिए एक नई क्रांति आएगी! कलाकारों की कला फिर निखरकर आएगी! भले ही उसमें A.I. की थोड़ी-बहुत झलक मिल जाएगी! शायद कला अपना नया रूप ले आएगी!

13. हारा-हारा मन

देखा था एक ख्वाब मैंने, जो अब एक पुराना सपना लगता है! अपने हाथों किया हर काम, न जाने क्यों कमतर लगता है! लोग कहते थे मुझमें वो बात नहीं, अक्सर उनका हर शब्द सच्चा लगता है! न जाने क्यों ये दिल हारा-हारा सा लगता है!

टूट गई हिम्मत मेरी, ये कैसे कह दूँ! इतनी असफलताएं और ताने मैं कैसे सह लूँ! आखिर कैसे कहूँ, कि अभी रुकना नहीं है मुझे, शायद ये है मेरी जिंदगी का सिर्फ एक पहलू! रास्ते लंबे हैं तो लंबे सही, आगे बढ़ने की थोड़ी कोशिश और कर लूँ! चलो एक बार फिर थोड़ा गौर कर लूँ!

वैसे, सब बुरा भी नहीं, मेरी कलम ने मेरा साथ अभी छोड़ा नहीं! हाँ, कुछ नहीं, बहुत गलतियाँ हुईं मुझसे, लेकिन फिर भी खुदा मुझसे रूठा नहीं! विश्वास है खुद पर, तो मुझे डरना भी नहीं, बंद कमरे में बैठकर रोना नहीं! जीना है तो लड़कर जीएंगे, अब झुकना मुझे मंजूर नहीं!

मुश्किलें तो हर मोड़ पर आएंगी, काला साया बनकर हमेशा डराएंगी! बस अब मुश्किलों के सामने झुकना नहीं! बीच रास्ते पर अब मुझे रुकना नहीं!

14. फॉलो

कोई है जिससे मैंने प्यार किया, अंधाधुंध होकर जिसे फॉलो किया, और फिर सोचा मैंने क्यों फॉलो किया! ऐसा नहीं कि उसने कोई गुनाह किया, बस बात ये है कि मेरी सोच से कुछ विपरीत किया! जब टकराई दो सोच, तो मैंने खुद को पीछे खींच लिया! खींचा तो लगा क्यों खींच लिया, इतनी आसानी से किसी अपने का साथ कैसे छोड़ दिया, आखिर उसने कुछ गलत तो नहीं किया, जो दुनिया कर रही है, बस उसको फॉलो किया!

सवालों के घेरे ने समझाई एक बात, बोला, समझदार बनो मेरे यार! फॉलो का मतलब ये नहीं कि आप बन जाओ गुलाम, और बंद कर लो अपनी आँखें और कान! समझो खुद को और खुद से करो सवाल, कहाँ करना है फॉलो और कहाँ करना है अस्वीकार!

समझ आई ये बात, तो मैंने खुद को थाम लिया, और आखिर उस अपने पर गौर किया! वैसे उसमें सब बुरा भी नहीं, अच्छाई और बुराई तो मुझमें भी है कहीं-न-कहीं! वैसे इसमें किसी का दोष नहीं, किसी की लाइफ में घुसना हमारा काम नहीं! सीखना ही है, तो सीखूँ उससे लड़ना, खुद के लिए समाज से तो कभी खुद से भिड़ना!

किया है उसने कुछ खास, तो मुझे भी कुछ खास है करना, छोटा ही सही, इतिहास है रचना! सीखा उससे मैंने आगे बढ़ना और खुद का समय बदलना! तो समझा मैंने आज, किस्से क्या और कब सीखना!

15. डूबकर उगता सूरज

कैसे बताऊं क्या हाल है मेरा, कभी लगता हूं थका हुआ तो कभी हारा हुआ परिंदा! अब तो उड़ने का भी मन नहीं करता, क्योंकि अंदर से घायल है ये परिंदा! लोग हंसकर जाते हैं मेरे आज पर, शायद आज बन गया मैं तमाशा !

खुद को समझाता हूं बहुत, पर कुछ समझ नहीं आता! न जाने क्यों, मुझे मेरा दोष नजर नहीं आता! अभी कल ही कहा था मैंने, कि कल करूंगा, नहीं पता था कल-कल करके इतनी दूर चला आऊंगा!

कल की बीमारी मुझे लगी, न जाने कैसे, अजीब-सी ये ख्वाहिश आखिर आई कहां से? सबसे अलग अगर चल बैठा, फिर ये हिचकिचाहट कैसे? शायद मैंने गलत रास्ता चुना, ये ख्याल मन में आया कैसे?

ख्याल ये नया नहीं, काफी पुराना है; मेरे सामने रखा एक आईना है! आईना कहता है वो राज जो कोई नहीं जानता, मुझे मेरी गलतियाँ बताने ये अक्सर आता ! ऐसा नहीं कि ये मुझे परेशान नहीं करता, परेशान करता तो कभी हराता है, पर उसके साथ ही बहुत कुछ सिखाता है!

सिखाता है कि तू हारा नहीं, तू उगता सूरज है, कोई बेचारा नहीं! बस कुछ खामियाँ हैं तुझमें, संभाल ले; तू पूरा आसमान है, सिर्फ एक तारा नहीं! समंदर की तरह बहना है तुझे, या आसमान बनकर छाना है; तुझे सोचना है कि तुझे क्या पाना है!

इस तरह का हौसला मेरा सहारा है, बस उम्मीदों का बना घर हमारा है! उम्मीदें हैं खुद से और खुद पर यकीन भी; हाँ, हैं कुछ गलतियाँ जिन्हें सुधारना है!

वादा है खुद से, खुद को टूटने नहीं दूँगा। अपने इरादों की मीनार यूं टूटने नहीं दूँगा! आज समय बुरा है तो बुरा ही सही, वादा है खुद से, ये समय बदलकर रहूँगा!

16. शिक्षा प्रणाली

सीखने का मतलब अक्सर छुपाया जाता है। बच्चों को क्या खूब पढ़ाया जाता है ! सलेब्स के नाम पर किताब थमाई जाती है, और याद करने के नाम पर रट्टा मरवाया जाता है! जो बच्चे पढ़ नहीं पाते, उन्हें नालायक बुलाया जाता है, और जो पढ़ पाते हैं, उन्हें सिर्फ याद करना आता है!

एक सवाल अक्सर मन में आता है, पढ़ाई को pressure क्यों बनाया जाता है? क्या बच्चों के लिए सब इतना मुश्किल है, या teachers को ही पढ़ाना नहीं आता है? ऐसा नहीं है कि शिक्षक गलत हैं, सच तो यह है कि पूरा सिस्टम ही उलट है! जहाँ शिक्षा मंत्री अनपढ़ पाया जाएगा, वहाँ शिक्षा का विकास कैसे हो पाएगा!

भावनाएँ साझा करना बच्चे को नहीं सिखाया जाएगा, तो वो दिल की बात कैसे कह पाएगा! कैसे बताएगा क्या बनना है उसे, कैसे जीवन में आने वाली चुनौतियों से लड़ पाएगा! पढ़ाई से भागने वाला बच्चा, आखिर इतिहास कैसे रच पाएगा!

आखिर कब तक स्कूलों मे Teachers कम पाए जाएगे, और जो मिलेंगे उनमें से भी कुछ अच्छा नहीं पढ़ाएंगे! कब तक बच्चों को नालायक बुलाया जाएगा, आखिर कभी उनकी काबलियत को भी समझा जाएगा? बच्चे नालायक नहीं होते, बस थोड़े कमजोर होते हैं, न जाने कब समझा जाएगा!

जब डराने की बजाय सिखाने पर फोकस किया जाएगा, न जाने वो दिन कब आएगा! बच्चों को समझने और समझाने का दौर अगर आएगा, तो बच्चा खुद ही काबिल बन जाएगा! हाँ, उसे थोड़ा समय लग जाएगा, शायद गलतियाँ करके भी पछताएगा, पर उन गलतियों से सीखकर कामयाब भी हो जाएगा!

बच्चों को समझो और उनके बचपन को मत रौंदो, उनमें काबिलियत है और वो सीखने पर बेहतर भी कर जाएगा!

17. विश्वास

विश्वास, कितना छोटा शब्द है विश्वास, हजारों-करोड़ों शब्दों में से एक! बाकी शब्दों की तरह ही रोज़मर्रा इस्तेमाल करने वाला एक शब्द! आप सब जानते हैं, कितना साधारण है ये शब्द! पर क्या वाकई साधारण है ये शब्द?

जब ये शब्द एक खिलाड़ी का इमोशन बन जाए, तब मैदान में खोलता जोश है ये शब्द! जब ये शब्द एक लेखक की कलम बन जाए, तब उसके हाथों लिखी ऐतिहासिक रचना है ये शब्द! जब एक पेंटर के मन में घुल जाए, तब उसे राज रवि वर्मा बनाता है ये शब्द!

ये सिर्फ एक शब्द नहीं, आपके अंदर तड़पती ज्वाला है, वो कस्ती है जो समंदर पार करना चाहती है। वो परिंदा है जो पूरे आसमान को मापना चाहता है! विश्वास करना और खुद को बेहतर बनाना ही कामयाबी का रास्ता है!

मुझे यकीन है एक दिन होगा, और जिस दिन होगा, सब देखते रह जाएंगे! मुझे भरोसा है, मेरी कलम का जादू सब देखते रह जाएंगे! बस इसी विश्वास के साथ आगे बढ़ रही हूँ, शायद एक दिन ये लम्हे भी बदल जाएंगे!

पर, आसान नहीं है ये रास्ता। अक्सर लोग कहते हैं, शायद मुश्किलों से डरकर कहते हैं! अगर भरोसा है खुद पर, तो क्या फर्क पड़ता है कि लोग क्या कहते हैं! इंसान चाहे तो कुछ भी कर सकता है, ये कामयाब लोग कहते हैं! ये निर्भर हम पर है कि हम क्या मानते हैं!

मौका सबको मिलता है और कई बार मिलता है, समझदार इंसान ही मौकों का फायदा उठाता है! पर विश्वास वो है जब हारने के बाद भी इंसान खड़ा हो जाता है! वो चिल्लाता है और एक दिन जीतकर दिखाता है, ऐसा हादसा ही विश्वास कहलाता है!

कामयाबी पहली बार में नहीं मिलती, खुद पर विश्वास रखने और अपनी गलतियों को सुधारकर दिन-प्रतिदिन बेहतर बनने से मिलती है! विश्वास रखो खुद पर, भरोसा जताओ अपने काम पर और यकीन दिलाओ औरों को, you can do everything!

18. यादे

कमरे में जाते ही एक पुराना संदूक खुल गया, और देखते-ही-देखते मैं पुरानी यादों में खो गया! एक घड़ी जो मैंने कभी चाव से खरीदी थी, आज धूल से सनी हुई मिली; एक खिलौना जो बचपन में दोस्त हुआ करता था, आज थोड़ा रूठा-रूठा मिला! आदत नहीं है मुझे चीजें संभालने की, शायद इसलिए, बचपन भी खो सा गया!

मैं सोच ही रहा था कि इतने में एक तस्वीर हाथ लगी, स्कूल के दोस्तों के साथ खड़ा वो लड़का थोड़ा मासूम-सा लगा! आज भले ही कामयाब है, पर तब थोड़ा शैतान हुआ करता था! दोस्तों के साथ रूठना-मनाना अक्सर चला करता था, याद है मुझे कैसे बहाने बनाकर स्कूल बंक किया करता था!

स्कूल की यादों में खोया तो एक जोकर पर ध्यान गया, जो दीदी ने बड़े चाव से खरीदा था! असल में जोकर बुलाती थी वो मुझे, इसलिए birthday पर भी जोकर ही दे दिया! दीदी के साथ मेरा रिश्ता ही अलग था, कभी समझाना तो कभी डाँटना, पर ज्यादातर खेलने का संगम था! शायद इसलिए उनकी विदाई पर मैं बहुत रोया था!

देखते-ही-देखते मेरी नजर एक तस्वीर पर गई, माँ-पापा के बीच खड़ा मैं मुस्कुरा रहा था ! birthday का वो दिन बहुत खास था, पापा का नया साइकिल देना और माँ के हाथों बेसन का हलवा बनना, एक-एक पल याद आने लगा!

बचपन का हर पन्ना मुझे भावुक करने लगा, संदूक ये पुराना, न जाने क्यों खुल गया! सोचता नहीं मैं पुरानी चीजों के बारे में, आज न जाने कैसे खो गया! जो दिन जी रहा हूँ, उनसे शिकायत नहीं मुझे, पर पुराने दिनों का बीत जाना निराश करने लगा!

खैर, छोड़ो, मैं भी किन बातों में लग गया, जो लौट सकता नहीं उस समय में खो गया! सच है, जिम्मेदारियाँ ज्यादा हैं, और काम के लिए छूटा सबका साथ है, पर उनके लिए ही तो बना ये लड़का कामयाब है!

पर, बीते दिनों की यादों में ऐसा खो गया, कि वहाँ से निकलने का मन ही नहीं किया!

19

बिखर जाते है वो, जो संघर्ष करते है ! अक्सर अकेले पड़ जाते वो, जो सबसे अलग चलते है ! ना साथ ना विश्वास, टूट जाते है वो, जब लोग ऐसा करते है ! मुश्किल होता है फिर से चलना, गिर कर बार-बार उठना, मुश्किल होता है कभी-कभी समय बदलना, और मुश्किल लगता है सपनों को साकार करना !

पर मुश्किल, क्या ये सब इतना मुश्किल है, या महज हमारे मन मे बसी एक गलतफेमि ! गलतफेमि ये कि हम काबिल नहीं, गलतफेमि है कि कोई साथ नहीं या गलतफेमि है हममे वो बात नहीं ! धारणाओ की कोई कमी नहीं जीवन मे, एक से बचे तो दूसरी सामने खड़ी ! धारणाएं हमे ये कहाँ से मिली, मुझे तो लोगों की बनाई महज बाते लगी !

कामयाब होना है तो समझो एक बात, ऐसी धारणाओं को मत रखो साथ ! साथ रखना है तो रखो खुद का विश्वास, या रखो अपने काम का हिसाब ! हिसाब कि मैं कितनी बेहतर हुई, कल कहाँ थी और कहाँ हूँ आज ! बिखरते है लोग तो उभरते भी है, फड़फड़ाकर गिरने वाले पक्षी उड़ते भी है !

देखा है मैंने लोहे को तपते हुए, और तपकर निखरते हुए ! देखा है कभी ना डूबने वाले जहाज को डूबते हुए और छोटी-सी कस्ती को सहारा बनते हुए ! तो देखा बाज को खुले आसमान मे अकेले उड़ते हुए !

कुछ बनना है तो लड़ना सीखो, खुद के लिए जीना सीखो ! काबिल हो आप ये बात जान लो, बस अपनी काबिलियत को बढ़ाना सीखो ! सीखो उनसे जिन्होंने कुछ खास किया और सीखो उनसे भी जिन्होंने कुछ नहीं किया ! समझ आएगा आपको क्या करना और क्या नहीं करना !

इन सबके का बाद एक ख्याल से बचना, मुझमे वो बात नहीं ये कभी मत सोचना !